

आशा कीर्तन

2431

ASMA ARCHIVES

श्रीगणेशायनमः॥

॥ अथ ब्रह्मज्ञानसागरलीष्यते ॥ दोहाः ॥ मोक्षसुकतनुमचरुत
जो कामना कामः ॥ मन किई द्वा मे टके भजो निरंजन नामः ॥ भजो निरंजन नामः तत्त्व देह अ
ध्यास मिठाव ॥ पावन केत जसा द्वा आप मे आप समावः ॥ जव दुरि दुष्टिय ह देहः जैसा का
तै सार हिया ॥ चरन दाय हि मुक्त गुरु नेह म सो कहिया ॥ देह मरे तु हे भ मरः पार ब्रह्म हे
सोयः ॥ अज्ञानि भटक फिरे लषे सो ज्ञानि होयः ॥ देह न हितु ब्रह्म हेः अभसि निर्वान ॥ नि
त न्यारो तु देह सो देह वर म सब जानः ॥ डोलन बो लन सो वनो भक्षन करन अहारः ॥ दुःख
सुष मेथुन रोग सब ग मि सित नीहारः ॥ जात वरन कुल देह कि सुरत सुरत नाउ ॥ उप
जे विन से देह सो पावन को गार्डः ॥ पावन क पानि द्वा पुहे धरति और भाकासः ॥ पावन तब

कंकोरमो भायकियो तेवासः॥ पाचपचिसोदेहसंग गुनतिनो हेसाथ॥ घ ७ उपादसोज
नियकर्तरुतउतपात॥ तामसऔरहिंसाकरे वचनचलनविप्रित॥ आलसऔरनि
डाकरेतामसगुनकिरितः॥ डिंभकपट छलछिद्रवशेषोदेसवेब्योहारः॥ रुठवचनभैद्यो
रहे तामसकेगुणाधार॥ सानवडाईनामनासिद्धचहेभजराम॥ भोजननानास्वादके
राजसगुनकेकामः॥ पेलतमासाराजसिऔरसुगन्धकेवासः॥ आपनकोउचोरे
एनकिकरहासः॥ दयादिभाआधिनति सितलहिरदेधाम॥ सत्येवचनगुनसातकि
जनधरमनिहकामः॥ दुषिनकाहुकरे दुःखसुषनिकटजायसमदृष्टि धिरजसदागुन
सातकसोपायः॥ राजसोतामसवटे तामससोबुधतासरजगुणातमगुणाछाडकेकरे

सतो गुणवासः॥ सतगुनमेमनधिरकरो करे आत्मसोनेहः॥ आत्मनिरगुनजानिये गु
नइंदिसंगदेहः॥ सातक राजसतामसीतिगुनसे संसारः॥ तिनपांचकोनासहे मायाव
सविचारः॥ अहंतत्त्वदंगमयो जिनसोतिनो देवः॥ जिनसोपे जो आत्मा अगम अगोच
र भवः॥ उपजे सो मायासभि विन सनेक मोजाया॥ छल माया सो कहत हे सपनो स कहन
वेहाय॥ निराकार अहो अचल निर्वोसितुजिव॥ निरातिंव निरावेर सो अज अभि जासि सि
वः॥ नाम हाड नाडिक हंरो मजान ओ मास॥ चरन दास प्रकृत यह पीरि सो पहिचानः॥ र
क्त विंदक फतिरो मेद मुत्र को जानः॥ चरन दास प्रकृत यह पानि सो पेह चान॥ निद्रा संग
म आलस सुषण्य सो होय॥ चरन दास पाचो कहि भग्न तत्त्व सो जोय॥ कल करन सो

रधावना उठना और संकोच ॥ देह बटे सो जानिय वाय तत्व हे सोय ॥ काम क्रोध मोह लो
भ भे तत्व आकाश को भाग ॥ रुम गगन नारि पवन मास अगन को अंस ॥ तुवानि सो जा
निये अक्षर एथिका वंस ॥ कफ भकास विंद वायु सो रक्त भवान सो वरु ॥ सुव जल रणा जि
त भन मेद एथि सो सुरु ॥ निद व्युम सपर सप वन आल स अगन पेछान ॥ प्यास निर रण
जित भन भुष एथि सो जान ॥ उठना तो आकास सो बल करना तो वाय ॥ बढन अगन धा
वन उदक संकोचन महि आय ॥ लोभ जो न भका अंस हे काम वाय का भाग ॥ क्रोध अ
गन मोह निर सो भे एथी सो व्याग ॥ पांच पचि सो ये कहि इन के सकल सुभाव ॥ निरा
कार तु वृक्ष हे आप आप मे पाव ॥ निराकार निर लिप्त तु देहि जान अकार ॥ अपनि देहि ना

नभतः यहि ज्ञान तत सार॥ स सार छेद सकेन हि पावक सकेन जार मरे मिरे सो तु न
 हि गुरु गंभेद निहारः॥ जने कटे काया यहि बने मिटे फिर होय॥ जिव भभी ना सिनि
 त्वेहेः जाने विरला कोयेः॥ जरा मर न धर्म देह को भुषणा स धर्म प्राणा॥ सकल विक
 ल मन जानिय स्वाद सो इंडि जान॥ भाषना कः जिह्वा कहं तु वा जान और कान॥ पां
 चो इंडि ज्ञान हे जाने स न सु जान॥ जो जो इन सो जानिय निश्चै ना ठहराय॥ कहे सुने वा
 षे लसे सो सो हि मिट जाये॥ इंडि ज्ञान सकेन हि मन बुध लहे न ताह॥ ज्ञान दृष्ट पेहे वा
 निये वा को वा से पाह॥ गुदा लिंग मोषति सरो हाथ पां वत्न धरे व॥ पाचो इंडि कर्म हे
 य विकहिय देह॥ देह मिटत हे सुपन ज्यु सि वर हत हे नित॥ मन जिते इंडि ग हे चित ई स्थि

तजबहोये॥ आत्मसोपरचोरहे राषसुतस मोवे॥ अधिकालजेठोरहे सुषेजानियदा
र॥ पित्तोरंगपेहचानियेपिवनषावनअहार॥ जलकोवासोभालहे लिंगजानिय
धार॥ मेषुनकर्मअहारहे रंगसुपेदनिहार॥ पोतेमोपावकरहे नैनजानियेधार॥
लातरंगहेभगनकोमोहलोभआहार॥ पवननाभमेरहतहेनासाजानियधार॥ ह
रेरंगहेवायुको गंधसुगंधअहार॥ आकाससिशमेवासहे सर्वनदारेजान॥ सबकु
सदअहारहेताकोस्थामपेद्वान॥ कारनसुक्षमलिंगहेऔरकहियअस्थुत्व॥ सरिर
तिनसोजानियमेमेरिजडमुत्व॥ जागितकाभस्थुनहेसुपनेलिंगसरिर॥ कारनजा
नसकोपतिजुरियासास्थिविह॥ जायतसुप्रसुसोपतिजुरिअवस्थाजान॥ परापसं

तिमध्यमावेषनिवानिचारः॥ जाग्नितवासानेनसेसुपनेकशेष्टान॥ जानक्षकोप
 तिहियमेनाभजुयामेतान्॥ नाभमध्यवतिपराहियपसंतिमुष॥ कण्ठमध्येमाजा
 नियकहंवेयरिसुष॥ जलसोमननेहवेकीयो भयोवायसोचित्॥ अहंकारभयो भ
 गनसो बुद्धयधिसोमिन्सर्वसपरसभौरगंधहे अरुकाहियतरसरूप॥ देहकरंमत
 तमात्रातुकहितनीहरूप॥ सर्वगुण आकासका सपरसगुनहे वाय॥ एथीकागुनगंध
 हे सोयप्रगट्टिद्याय॥ रूपअग्निकागुनकहंरसगुनजलकाजान्॥ रनजीतवतावैषोत्त
 केयरुसिष्यलेपेचान्॥ सर्वनसुष इंडिभइतत्वअकाससोरोय॥ तुवाहान इंडिजुगल
 वायतत्वसोरोये॥ पावकसो इंडिजुगल भयेनैन अरुपाव॥ जलसो इंडिभइलिंगहस्ता

दोनाब्र॥ गुणनासका दोभई एथि सोपे चान॥ चरणादास नुं कहत हे यक कर मवि यज्ञा
न॥ राजसकर इंडि भइताम सकरु तत्व पांच सात ककर वेवत भय चरन रास के साच॥
तिनो गुन से हे परे सो आत्म को रूपः सो ब्रह्म न भाव हि अगम जगो चर गुण॥ दस ई
डित तत्व पांच हेत नमात्रा दी पाच॥ चारों अंता करण हे य चौदिसो जान॥ जागिन तमे
चौदिस हे सुपने मत्र ह जान॥ सुसोप तमे सभली न हो यह अंग जट के माह॥ तुरि आ
यय कर स आत्मा निर्मल भवत अनंत॥ घरे बडे उपजे मिहे जट को यही सुभाह॥ सो स
भ को त क कर रहि नाना किय उपाव॥ चेतन न्यु को न्यु सदा सदा अकर्ता जोये॥ सब करे
म सो रहित हे आत्म भै सो होय॥ काहु सो उपन्यो न हि वा सो भयो न कोये॥ वन मरे मा

रेनहि शम कहवै सोय ॥ काया माया जानिय जिव वसहे नित्य ॥ काया दुर सुरत मि
 हेतु परमात्मनित्य ॥ पाप पुन्य आसात जो तजो मान और थाप ॥ काया मोह विकार त
 ज नपे सो अजपा जाय ॥ आप भुलानो आप मे वयो आप हि आप ॥ जा को दुंडत फिर
 तहे सो तु आपे आप ॥ इस्पा दो इ विसार के कि जे न होय निर्वास ॥ तु तो जिन मुक्त हेत जो
 मुक्त की आस ॥ आपा पो जे आप त्रष आप अपन मे देष ॥ चरन दास नही तु वसहे तहि
 पुरुष अलेष ॥ जै से कहु आस मिर के आपे माह समाय ॥ जै सिन निखास मे रहे सुत लोला
 य ॥ सम घट रम्यो सो राम हे आद पुर्ष निरगं ॥ त्रष चौरा सिजु न मेय कस मान्यो सं ॥ दृष्ट
 पुष्ट जावै न हिरुप न देषो जाय ॥ विन सुरत वीन नास को घर पर सो समाय ॥ छपे ॥

इसा दोई कर दूर आप तु वृक्ष हो जावै॥ और स डुतिया कौन तास को शिश निवावै॥ मा
ला तिलक वनाय पुरव अरु पछी म दोशय॥ ना भक मल कलु र हिर न जंगल भयावो
राय॥ चरन दास लपट दृष्ट कर्य कशव भर पुरहे॥ निरष परषले नि करहि कहन सुनन
सो डुरहे॥ छपे॥ रुटि सिय दृष्ट जगत सभ रुठा दरसे॥ मुरष जाने सत्यता ता सो फिर
परसे॥ चंड मुरज थिर नहि नहि थिर पौन पानि॥ थिर देवा थिर नहि नहि थिर माया
रानि॥ नो वनाय चौरासि सिद्ध जो चर्न दास थिर नहि है वृक्ष सत्य सर्व जहे आत्म विवा
र कि नें नाग हो॥ जो मुख सेति भा किये और सुनियत हे कान॥ जो भाषन सो देषिय सभ
हि माया जान॥ एक सभ नर र मर हो चेतन जटके माह॥ माया दर सत हे समि वृक्ष दी

षतहेनाह॥ जैमेतिलमेतेलहे फलमध्येज्युवास॥ उधमध्ये ज्युधिउहेलकडिमध्ये नास
 ॥ थावरजंगमचरअचरसभमेयके होयै॥ जिजुमनकोमेडोरहेवाहरनाहिकोये॥ य
 कडोरमनकागहो अवरनवरननिहार॥ आत्मतोनिरुपहे नित्येअनात्यविचार॥ मा
 यायहिसुभावहे उदेहोयछिपजाय॥ चंचलचपलसुभावनिबलाजिजुंगलजाय॥
 परमात्मतो नित्यहे ताको आदनअंत॥ सदाअचलचंचलनहिसवगुनरहतअनंत॥
 सतचेतनआनंदहे आदअन सदहिन॥ आदअंतआकारको सातुठोजाना॥ सुरत
 नाजैअकारहे जिजुभुतनकोनाच॥ मृतत्रीमाकोनिरहे निकटगयनहिसाचा॥ चित
 वसाचिसिलगेषोजकियसीटजाय॥ दियेहेपरहेनहिकोतकसौदरसाय॥ सिष्येउवा

रुडवाच॥ आपवस्रमायाभयो ज्युजलपान्ना होय॥ पालागंलपानि भयो जैसेनाहि दो
य॥ रुठिमाया सुकहे ज्ञानि पंडितलोय॥ भर्मभुलसाचिलषे समरे साचन होय॥ सोनेको
गहनोगटो कहन मुननको दोय॥ गहनोना सोनो सभेनेकजु दोनहि होय॥ रुठसाच दो
नाउहे रुठमिटेरे होसाच॥ नाउमिटे सुरतमिटे भुषनको लगे माच॥ जाकोमाया कहतहे
सो तुनेकनिकास॥ जेसेहिंगकपुर किनेकजु दिनहि वास॥ जलसमान तो वस्रहे माया
लहरसमान॥ लहरसभ वनिरहे लहरकहे अज्ञान॥ पेलपेलौ नापोंडकेः भाजनराषे वा
उः॥ विनविनसें विषाडहे विनसजाय तो पाड॥ मारिके भोंडे बनेः सुरत सुरत नाव॥ विष
सफुट मारि भई वासनको कहु ठाव॥ जैसेहि माया नहि समरुदेष मनमाहः॥ जोदिषे सो

वे.
७

बुद्धिहेरिचकमायानाह॥ इक्ष्वामेरुदोऽतज्योयकमनविसराम॥ बुद्धिज्ञानविज्ञानहेसमरु
परमपदधाम॥ कीवतः॥ स्वासहिस्वासचलेजपुआपहिहेजोअषण्डः॥ ठरेनहिदारेभि
तरवाहरहेभरपुरःसोदुइतकाहननाहनन्यान्योःगुरुभेददियोभुमहुरभयोःयहतोभ
तभारोःदृष्टादृष्टजो रामकोदेषतःरामभयोपुनदेषनहारोःबुद्धिज्ञानतोसोकहोःजा
सोमोहनसायःयमतअंतसमोअरहेमितेबुद्धिमेजाये॥ सोवतहेनहि सोवतनिदसो
ःजागतहेनहिजागेषानिःजोगकरनेकोरेकछुसाधनीध्यानकोरेनकोरेकछुआनिःव
चनविलासकोरेचरचाःनकोरेचरचा॥ चलचानहिहोयविनानिचरनदासचतायेदियो
सुषदेवनेअैसेरहेताहेजानियज्ञानि॥ भसतहेनहिभतभोछजनपिबतहेनहिपिबत

रामः
७

पौनिः॥ डोलतहेनहीडोलतः पेडसोः वोल्ततहेनहिबोल्ततवानिः॥ नानारूपव्योहारमोदे
षतः नेहचेकमधेकेहुनहिआनिः॥ चरनदासवतायदियोसुषदेवनेसेसरहेताहेजानि
यज्ञानिः॥ कवित्मंदरकोत्यागेभागेक्युगिरवरकोहरजूकोदुरजानकलपेक्युवात्र
रेसवसाधनतावौः चारवेदगायो आपनमे आपदेव अंतरलों लावरे वोल्तते कापोजक
रेः उह्मज्ञानहृदेधरोः मायाअज्ञानहरो जेहेजव आपधाक्षादापुन्यकहापापः कहेच
रनदासेनुनिहचलघरआवरे॥ आपआपमे आपहेषेत्यो बहुविस्तार॥ दांतयातो कहुहे
नहिः यकहिय कनिहार॥ कहिना रायरा नामहो कहिबुद्धा कहीवेद॥ कहिसंकरः क
हुंगौरजाः कहिअभेदाभेद॥ कहिरिषमुन कहिदेवता कहिसिद्ध कहिनाथः कहिआस

वे.
८

न कहितप कहिकहि ज्ञानिकहि जोग॥ कहि दुषिकहि सुष कहिः कहि रोग कहि भोग॥
कहि नारिकहि नर कहिकहि बालक कहि बाल॥ कहि दाता कहि संगता कहि सुचिक॥
गाल॥ कहि वृक्ष कहि फल भयो कहि फल भयो कहि फल कहि विज॥ कहि सुलसा
षा कहि कहि माला न कहि चिब॥ कहि मालिन कहि मालति कहि फल बां कहि हार॥ क
हिं मेहे लपिर कहि कहि दीपक कहि इजियार॥ कहि वागकारि कहि कहि भवरगु
जार॥ कहि घटा कहि कहि विजुरिः दादर मोर वहार॥ कहि वदवानल अगन होधाम्यो
तेज अपार॥ मान सरोवर भयो कहिः मोति कहि सुगार॥ कहि सलता कहि धिम कहि
मिन कहि जाल॥ कहि कथा सोता कहि कहि किरत नरुप॥ कहि त्याग वेरा गलेति नो संत

रामः
८

सरूप॥ कहिं एधि कहिं विरज कहिं कहिं गोपि कहिं बाल॥ कहिं कालिंदि निकट होः कहिं
वीडावन धाम॥ कहिं कुंज अत सोहन कहिं जुगल भयो राम॥ कहिं सुगंध सित लपवन
कहिं वंसि वट ठाव॥ कहिं कन हेया हो पडोः यख्यो व अंग मोर॥ कहिं सुरलि अधर न धरि
ः वाज तहे घन घोरः कहिं सुकट ऊरा डल कहिंः अल के कहि कपोल॥ कहिं ललने चहे ते न
होः नासा सुकट सुडोल॥ कहिं धुक धुकि कण्ठ मे कहिं मोतिये न के माल॥ कहिं वाजुन व
रन के नट जोर मदन गोपाल॥ कहिं करा कर कहिंः कहिं पौडु चि जाहा गिर॥ रतन चड
क अगुठि कहिः लागि संग जंजिर॥ कहिं वादलो जद हेः निमो हो गयो अंग॥ कहिं वझी ग
ल जं द होः कहि सावरो रंगः कहिं पेजन कहिं पग कहिंः कहिंः कहि चरन कहिं दास॥ क

वे.
२

हि आपहि नख भयोः ससियर से परं कास ॥ आप आप मे आप हैः आप आप मे आप ॥
आप अपन मे ज पत हैः आप आप नो जाप ॥ अभ ना सि ना से न हिः ना स न क व हुं हो या
त त्व सरूपि य कहैः कवि हो ये न हि दो ये ॥ आप वृक्ष मुरत भयोः जु बुद गत जल मा
ह ॥ बुद गल विन से ना सु स वः जल विन स त हे ना ह ॥ बुद गल देख्यो जल स मैः बुग दल
क हुं न हो ये ॥ कह वै को ड जो क हो जल बुग ल न हि दो ये ॥ भयो ने क मे बुद बुदोः ना च
कुद मिट जाये ॥ निरा कार रहे जाय गोः मुरत ना ह ह रा ये ॥ निरा कर आ कार धरः षे ल्यो
कै य क बार ॥ सु प नो हो हो मिट गयोः र हो सार को सार ॥ चो प ड ॥ आप आप मे पल म
चाये ॥ जो पानि बुद गल हो आये ॥ अैसे वृक्ष धरे काया ॥ आप हि पुरुषे आप हि मा

रामः
२

या॥ आपनारायेनलछिमिभयो॥ नाभकमलतेवहाभयो॥ आपरुडचतुरविनानि
॥ होनारायेगाविसुकहायो॥ सेशनागहोतलेपठायो॥ तेतिसकोटिदेवताभयो॥ रि
षमुनिकोरअगसिछयो॥ चारोजुगआपहिभयेलोकापापपुन्येआपहिभयेहेका॥
आपहिफलसुलऔरवारि॥ आपहिपुरुआपहिनारि॥ दोहा॥ जलचलपावकरामहेः
रामरम्योसवमाह॥ हरसवमेःसवराममेःऔरडसरोनाह॥ दसअवतारआपहोआयो
॥ सेवकस्वामिआपकहायो॥ आपहिं गिरवरः आपहितवरः आपहिहंसः आपहिसर
वरनषट्कर्सः पुजेआपअपहिपरसंः आपहिं घ्यानिः आपहिं प्रेमिः आपहिजोगभोग
औरनेमिः आपहिं चरनदासः सुकदेवकहायोः आपनोभेदआपहिपायोः सुपनोमिद

वे
१०

गयोयकः अकारः ज्ञानि अवहिते हो निहारा ॥ निमुक्षमः अस्थुलन भारि ॥ रूपरंगः नहि ह
परकारिः वारपारमेक दुनहि पायोः कहत कहत मेगयो भुलायोः अवमोपेक दुक ह्यो
नजाईः हृदक हुतो हे नहिः वे हृदक हुं तो नाहः ॥ हृदवे हृद दो नो नहिः वरन दासन हिना
बछपे ॥ तवन चंडन हि सुरजन हि नभ मेता सयनः नहि धरति नहि सेसः नहि अगति
पेग येन निर्गुण सर्गु ननाः हताः तवन रूपवानि नहिः नहि ज्ञानि नहि पण्डता जो सर
वन से सुनेः और सुष से ति भाषेः और कछु देषे नेनः और सो वै औ जागेः यस बरु ठो जानः
कछु हरत हे नाहिः वृक्ष सत्य सरव जे हेः कुठो दर से जगत यहः जगत वृक्ष मेः जें दिपे जें
धरति पेरषः रेष मिठ धरति रहेः असे हि जग देषः जपछा उदे किस का जाप जपे सारि वात

रामः
१०

माना मनि सान हे जि ओं प मुद के कि स्का ध्यान घरे उस कि सुरत सारे जा हान हे जि कु छ
ले वै कु छ छा उ दे वै औ सेवा त मो तु हे रा न हे जि च लि ज्ञान जाना र य ह जिः बहु विध वि
श्व विचारः चिदानंद सो भि म न हि घट सर्वा दि विकार मृत ते भि न न दे षि य ॥ क वित ॥
आद हु चे त न अंत हु चे त नः मध्ये हु चे त न मा या न दे षि व स्र अ ष ण उ नि ण ल म्ब और
न दु स रे आत्म य कीः सिंध अथा ह अपार विरा जित रूप न रंग न हि क छु रे षि च र न दा स
न हि सु क दे व न हि ना को ई मा र ग ना को ई भे षि ॥ विषः अथ स प्र भू म का ज्ञान लि ष्य ते ॥
वि से वि षे भ ई दो स ताः गु र ति र थ अ नु रा ग ॥ जा सो सु भ ई सा क हिः का या अ व न म न ला
गा ॥ भ ग व त ग न र त आ न म त षे म ज ग त नि त चे त ॥ गु ण गा व त पु ल क त ह दो दो दि

वे.
९१

नदिनअधिकसरस॥इजिकहिचीचारनउपज्योतत्वविचार॥अेकान्तहोयसोधनत्वग्यो
कोहंकोसंसार॥८॥गानसासोतिसरिःमनकोप्रत्याहार॥थिरहोनिजेसरूपमेराषत
नित्येसंभार॥चौथीसत्वापतिअनभोडदेअभंगआत्मजदरस्योभलेज्युंसिन्धमाहतरं
ग॥छुघोतनअभमानजवनिचैकियोसरूप॥असंगअसत्ययहभुमकापंचमहाअ
नुप॥कहेपदारथबुद्धलो॥सबकोहोयअभाव॥यहपदारथअभावनिषष्टमभुमल
बाव॥भावाभावनताहंकहुःसप्तमनुरिमाह॥मेतुतहानसभवेकाहाआयकाहा
ताह॥प्रगटकरिगुरुदेवसप्तभंकाज्ञानकिअनाथलहेनिजमेवचितदेकरेविचारजो
॥ ॥इति श्रीवसुज्ञानसागरसंपूर्णसमाप्तम्॥ ॥शुभसम्भूयात्॥

वे.
१२

तुरिमाह॥ मेतुतहानसभवेकाहाआयकाहनाह॥ प्रगटकरिगुरुदेवसंप्रभुंकाज्ञानकि
अनाथनहेनिजभेवचितरेकरेविचारजे॥ ॥ इति श्रीब्रह्मज्ञानसागरसंपू
र्योसमाप्तम्॥ ॥ शुभम्भूयात्॥ ॥

रामः
१२

आर्य समाज काथि
2431
ARCHIVES

२